International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 966-967

व्यंग्य और विद्रोह का कवि ''धूमिल''

डॉ0 नीतू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी आई0 टी0 पी0 जी0 कॉलेज लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
समकालीन कवियों में ऐसे कवि कम हैं, जो कविता में प्रयुक्त शब्दों की सार्थकता के प्रति वास्तविक जीवन में और लोक व्यवहार में भी पर्याप्त सजग हैं। सुदामा प्रसाद पाण्डेय 'धूमिल' का इस दृष्टि से विशेष महत्व है। उनकी कविताओं में जीवन के संघर्ष और तनाव से पैदा हुए शब्द मूलभूत मनुष्यता के प्रति अपने कर्तव्य की चिन्ता में लीन हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक द्वन्द्वों की अभिव्यक्ति तीखे ढंग से उनकी कविताओं में मिलती है। सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना के साथ राजनीतिक चेतना का इतना उपयुक्त सामंजस्य संभवतः मुक्तिबोध के बाद 'धूमिल' के ही रचना संसार में देखने को मिलता है।

मूल शब्दः सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, अनुभूति, व्यंग्य

प्रस्तावना

उनका प्रथम काव्य संग्रह 'संसद से सड़क तक' की कुल 25 कविताओं में 'धूमिल' ने जहाँ लोगों के मस्तिष्क को झकझोरा वहीं उनकी भावगत संवेदनाओं ने कुंठित मनोवृत्ति को प्रस्तुत मूल्यहीनता, अराजकता और चेतना की द्वन्द्व स्थिति से जोड़ा। संसदीय राजनीति अर्थात् सदन में चलने वाली राजनीति को सड़क पर लाने वाले धूमिल ही हैं। धूमिल की कविताओं में व्यवस्था की चीड़–फाड़ स्थितियों की सटीक व्याख्या और उनसे उबरने की छटपटाहट मौजूद है। जनता के सुख–दुख, उसके सपनों और निराशाओं का जैसा जीवन्त चित्र धूमिल ने खींचा है, शायद ही किसी अन्य कवि ने किया है। 'धूमिल' को व्यंग्यकार के रूप में जो मान्यता मिली उसका कारण वर्तमान व्यवस्था का क्रूर मजाक और दोहरा चरित्र है– 'मेरे हाथ काले हैं/मेरी आँखों में जाले हैं/मेरी जुबान चुप है/होठों पर ताले हैं/टखनों में जाड़ा है/मेरा जीवन लार टपकती हुई नेकर का नाड़ा है। मुझे मेरे दर्द ने पिछाड़ा है। ''इन पंक्तियों में धूमिल की मनोदशा का प्रच्छन्न संकेत मिलता है कि वे एक आम आदमी की तरह अपने अन्दर घुटन, टूटन, कुंठा का अति केन्द्रीकरण अनुभव करते थे। आज जहाँ चारों तरफ मूल्यों का ह्रास हो रहा है। व्यक्ति मूल्यहीन परिवेश में सांस ले रहा है। उसे पथ नही दिखाई दे रहा है। जीवन–मूल्यों के इस संकट से धूमिल सचेत थे–'सहानुभूति और प्यार/अब ऐसा छलावा है जिसके जरिए/एक आदमी दूसरे को अकेले–अंधेरे में ले जाता है और उसकी पीठ में छुरा भोंक देता है''। धूमिल समसामाजिक अनुभवों से अपनी कविता को व्यापक और गहरा बनाते हैं। व्यक्तिगत और अकेलेपन की पीड़ा से हटकर वे समाज, देश, संसद, लोकतंत्र, वर्गभेद और जीवन के मुखौटों को उतारने की कोशिश करते रहे किंतु जनता के त्रासद अनुभवों को वे भूल नहीं पाये। व्यक्ति के नैतिक पतन को देखकर वे दुखी हैं–'मगर यह वक्त घबराए हुए लोगों की शर्म/आंकने का नहीं/और न यह पूछने का–कि सन्त और सिपाही में/देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य कौन है।'' धूमिल की काव्य कला संवेदना तथा सामाजिक पक्षधरता को समझने के लिये उनकी कविता ''पटकथा'' आवश्यक है। ''देश की और अपनी ऐसी बेरहम तस्वीर इतनी बेवाकी से उतार सकना एक समर्थ सर्जनात्मक प्रतिभा द्वारा संभव है और उचित भी, यह कविता धूमिल को समकालीन कवियों में एक अलग, खास, और उच्च दर्जा देती है।''धूमिल को जनवादी कविता पथ प्रदर्शक कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। 'पटकथा' कविता जनजीवन में व्याप्त असन्तोष, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, चोरबाजारी, स्वार्थपरता को प्रस्तुत करती हुई वस्तुतः जनवादी है। उनके शब्दों में जनतंत्रीय व्यवस्था का शोषक रूप दृष्टव्य है–''मुझे लगा–आवाज/जैसे किसी जलते हुए कुएं से/आ रही है/एक अजीब सी प्यार भरी गुर्राहट/जैसे कोई मादा भेड़िया/अपने छौने को दूध पिला रही है और/साथ ही किसी मेमने का सिर चबा रही है। '' 'पटकथा' के अतिरिक्त धूमिल की अन्य कविताएं भी राजनैतिक व्यवस्था का साक्षात्कार कराती है। 'धूमिल की कविता में जंगल, कुत्ता, व्याकरण भेड़िया, जनतंत्र, संसद, रोटी, भाषा, दलदल आदि शब्दों का प्रयोग बार–बार हुआ है। 'जंगल' अराजकता का सूचक है। 'कुत्ता' शोषित, तिरस्कृत वर्ग का प्रतीक है। 'भेड़िया' अत्याचार की ओर संकेत करता है और 'जनतंत्र' भारतीय व्यवस्था का प्रतीकात्मक अर्थ देता है। इसी तरह अन्य शब्दों का भी अपना एक खास अभिप्राय है। 'मोचीराम' में धूमिल का मोची अपनी व्यथा और दंश नहीं दर्शाता, वह शोषित, अपमानित श्रेणी की ओर से उच्च वर्ग को उसी के आइने में झाँकता है। 'कैसे आदमी हो/अपनी जाति पर थूकते हो? आगे उसका 'मोचीराम' बड़े स्पष्ट और बेबाक शब्दों में कहता है–'बाबूजी! सच कहूँ मेरी निगाह में/न कोई छोटा है/न कोई बड़ा है/मेरे लिये हर आदमी एक जोड़ी जूता है/जो मेरे सामने/मरम्मत के लिये पड़ा है।'

धूमिल का अक्खड़पन उनकी कविताओं में अपनी पूर्णता के साथ उभरा हुआ है। उनके 'कुम्हड़े, की सब्जी' सामाजिक क्रूरता के घेराव में नये मानव मूल्यों का प्रतीक है। ''कविता/घेराव में/किसी बौखलाए हुए आदमी का/संक्षिप्त एकालाप है''.....और जहाँ हर चेतावनी/खतरे को टालने के बाद/एक हरी आँख बनकर रह गई है'' जिसका–'पेशेवर भाषा के तस्कर–संकेतों में/और बैलमुत्ती इबारतों में/अर्थ खोजना व्यर्थ है।''

अपनी आक्रामक मुद्राओं में वे व्यक्ति नहीं, व्यक्ति के दंभ पर चोट करते थे। वे जानते थे कि प्रजातंत्र मे कोई कमी है, सामाजिक व्यवस्था में कोई गड़बड़ी है। उनकी कविता राजनैतिक मुखौटों के साथ सामाजिक दरिन्दों को भी पहचानती है। वे इस सच्चाई को

बेखौफ शब्द देते हैं–''वे सबसे सब तिजोरियों के/दुभाषिए हैं/वे वकील हैं, वैज्ञानिक हैं/लेखक हैं/कवि हैं। कलाकार हैं/यानि कि–कानून की भाषा में बोलता हुआ। अपराधियों का एक संयुक्त परिवार है।'' धूमिल ने केवल व्यवस्था या सत्ताधारियों को ही अपने व्यंग्य का विषय नही बनाया उन्होंने जहाँ कहीं भी दोष देखा उस पर प्रहार किया। मानवीय दुर्बलताएं और सामाजिक विद्रूप उनके व्यंग्य के प्रमुख विषय रहे हैं। व्यंग्यकार की दृष्टि बड़ी पैनी होती है। असंगति और अनौचित्य का वर्जनात्मक निरूपण है–'व्यंग्य'। धूमिल का व्यंग्य तकलीफों से उत्पन्न समझ है जिसका उद्देश्य जन–जागरण है। जीवन मूल्यों के संकट को व्यक्त करते हुए धूमिल ने लिखा–''आदतों, और विज्ञापनों में दबे हुए आदमी का/सबसे अमूल्य क्षण संदेहों में/तुलता है। हर ईमान का एक चोर दरवाजा होता है/जो संडास की बगल में खुलता है'' विसंगति ज्यों–ज्यों गहरी और तीखी होती जाती है अनौचित्य और अनाचार त्यों–त्यों बढ़ता चला जाता है। उनकी लम्बी कविताएं 'पटकथा' लोहसांय, राजकमल चौधरी के लिए, 'भाषा की रात', 'किस्सा जनतन्त्र', 'शब्द जहाँ सक्रिय हैं, 'नगरकथा', मै हूँ, 'अर्थगर्भिता और तीक्ष्ण प्रहारात्मकता है। उनका सामाजिक व्यंग्य सामाजिक रूढ़ियों और दकियानूसी मान्यताओं के विरूद्ध तो है ही, प्राचीन मूल्यों के विघटन से उत्पन्न स्थितियों पर अभिकेन्द्रिय है। वह अनुभव करते हैं हमारा जनचेतना आज भी–डफले पर बजती है भूख पैर में घंटिया/ दुपहर की आँच में सिकती हैं/रोटियां/मजा करो–/तुम अपनी संसद के साथ/हम अपनी सांसत के साथ/छितो डांग–डांग/छितो–छितो../'' इस रूप में धूमिल ने समकालीन यथार्थ के लिये व्यंग्य, वक्रोक्ति, और विडम्बना का व्यापक स्तर पर प्रयोग किया है। धूमिल के व्यंग्य की चोट गहरी है पूँजीवादी व्यवस्था में हर चीज बिकाऊ है, श्रम से लेकर शरीर तक और सुख से लेकर मान सम्मान तक। अस्तु सभ्यता संस्कृति सबका मापदण्ड मात्र पैसा है। इस विसंगतिजन्य स्थिति पर उनका व्यंग्य दृष्टव्य है–''सबसे अधिक हत्यायें/समन्वयवादियों ने की/दार्शनिकों ने/सबसे अधिक जेवर खरीदा।'' आज की सबसे बड़ी आवश्यकता रोटी की है। आवास की है। व्यक्तिगत दर्द और अकेलेपन की पीड़ा से हटकर धूमिल आज की भ्रष्ट राजनीति, समाज, देश संसद, वर्गभेद, और विसंगतिपूर्ण जीवन के मुखौटे उतारने लगे। गरीबी और बेरोजगारी से घिरे रही जनता के त्रासद अनुभवों को अपनी कविता का विषय बनाया। ''आज मैं तुम्हें वह सच्चाई बतलाता हूँ। जिसके आगे हर सच्चाई छोटी है। इस दुनिया में/भूखे आदमी का सबसे बड़ा तर्क रोटी है।'' बेकारी, बेरोजगारी और भूखमरी के लिये आज की व्यवस्था ही जिम्मेदार है। ''एक आदमी/रोटी बेलता है। एक आदमी रोटी खाता है/एक तीसरा आदमी भी है/जो न रोटी बेलता है/न रोटी खाता है/वह सिर्फ रोटी से खेलता है/मै पूछता हूँ/यह तीसरा आदमी कौन है?/मेरे देश की संसद मौन है।'' धूमिल राजनैतिक कविताओं के सहारे सपने के सौदागरों की कलई खोलकर आम आदमी को सावधान करना चाहते हैं। उनकी राजनैतिक कविताएं बहुत सटीक लहजे में अपने वक्तव्य को कविता में प्रतिष्ठित करती है।

वे अपनी कविता के बारे में स्पष्ट कहना चाहते हैं कि उनकी कविता का उद्देश्य क्या है। वे कविता के द्वारा समाज में परिवर्तन तो चाहते थे लेकिन कविता को हथियार की तरह इस्तेमाल नही करना चाहते थे। मेरे भीतर की आग/उसी तरह जलती है/परन्तु–मेरी कविता अपनी डँडइयों के बीच/शब्दों की राख उगलती है।'' इस रूप में धूमिल की सबसे बड़ी पहचान है–आक्रोश। उनकी कविताओं में कहीं–कहीं उत्तेजनात्मक भाव मिलते हैं किन्तु अधिकतर कविताएं सूचनात्मक, तथ्यकथन की प्रणाली में ढलती चली गयी है। हाथों में ''कविता'' और दिमाग में आँतों के 'एक्सरे' का केन्द्रीय तनाव प्रत्यक्ष है। धूमिल यह मानते थे कि कविता का सत्य जीवन के सत्य से अलग नहीं है। इसलिये जीवन की जो सच्चाई है, उसे कविता जब तक शब्द न दे तब तक उसकी सार्थकता संभव नहीं। समाज में व्याप्त विसंगतियाँ धूमिल के रचना संसार में एक नया अन्दाज लेकर मुखरित हुई है–''हिजड़ों ने भाषण दिये/लिंग बोध पर/वेश्याओं ने कविताएं पढ़ी–आत्म शोध पर/प्रेम में असफल छात्राएं/अध्यापिकाएं बन गयी हैं। और रिटायर्ड बूढ़े/सूर्योदयी''। यहाँ कथ्य में तीव्रता है। ऐसे अवसरों पर उनकी भाषा आक्रामक हो गयी है और व्यंग्य में कुछ ज्यादा तीक्ष्णता आ गयी है। उनके व्यंग्य मन की गहराइयों में बैठकर पाठक को झकझोर देते हैं। धूमिल की कविताएं व्यंग्य के जिन आयामों को लेकर प्रहारात्मकता के साथ आगे बढ़ी हैं निश्चय ही उससे एक सार्थकता का बोध होता है। उसमें गाम्भीर्य है। वे नये रूप, नये विषय और नयी सामाजिक समझ लेकर आये, जिससे एक नया धरातल तैयार हुआ।

निष्कर्ष

धूमिल का काव्य अनुभूति; विचार एवं समझदारी की त्रिवेणी है। इनके पारस्परिक घुलमिल जाने के कारण उनकी कविता बौद्धिक स्तर पर सक्रिय है। उनमें अनरूद्ध अभिव्यंजना–शक्ति है, और है व्यंग्य के साथ विद्रोह का प्रधान स्वर। धूमिल की कविताओं में व्यंग्य के साथ–साथ अभिव्यंजना शक्ति भी प्रगाढ़ है इसलिये प्रतीकवाद और प्रभाववाद दोनों रूपों में वे उभरे से दिखायी पड़ी है। 'शब्दों को खोलकर रखने वाले' कवि धूमिल की कविता में सयाहता और नग्नता है। डा0 नामवर सिंह के अनुसार ''धूमिल की कविता मजबूत धरातल की ओर बढ़ी। शिल्प और विम्ब नियोजन मे काफी सजगता आ गयी। उस समय नयी कविता, खासकर अर्थ की लय के घोर विरोध में वे अपना स्वर ऊँचा करते रहे। इस रूप में धूमिल की कविता सभी दृष्टियों से, कविता की दुनिया का विस्तार करती है।

सन्दर्भ पुस्तक सूची

1. घूमकेतु, धूमिल और साठोत्तरी कविताः मीनाक्षी जोशी–राजकमल प्रकाशन।
2. कवि परम्परा–तुलसी से त्रिलोचनः प्रभाकर क्षोत्रिय–भारतीय ज्ञानपीठ।
3. आधुनिक काव्यः चिन्तन और संवेदना–डॉ0 करूणा शंकर उपाध्याय–राजकमल प्रकाशन
4. समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्य–डॉ0 रेवती रमण–नवनीत प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य सिद्धान्त–सम्पादक डॉ0 सुधाकर–विकास प्रकाशन।
6. समकालीन सृजन सन्दर्भ–भारत भारद्वाज–वाणी प्रकाशन।
7. आधुनिक हिन्दी काव्य में समाज–डॉ0 गायत्री वैश्य–रंजन, प्रकाशन, आगरा।
8. नयी कविताएं एक साक्ष्य–राम स्वरूप चतुर्वेदी– लोक भारती प्रकाशन।